वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 270 शनिवार 21 फरवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

@ पेज 2 पर

शिक्षकों के रिक्त पद भरने के लिए सरकार प्रतिबद्धः दिलावर

चरणबद्ध रूप से होंगी नियुक्तियां

जयपुर. कासं

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने शुक्रवार को विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार शिक्षा विभाग के सभी रिक्त पदों को भरने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा द्वारा पांच वर्षों में 4 लाख सरकारी नौकरियां देने की घोषणा को चरणबद्ध तरीके से लागू किया जा रहा है, जिसमें लगभग 1 लाख 75 हजार पद शिक्षक एवं अन्य कर्मचारियों के होंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार द्वारा अब तक 72 हजार पद भरे जा चुके हैं, जिनमें कुछ पद पदोन्नति से तथा कुछ नई भर्ती से भरे गए हैं। इसके अलावा वर्ष 2024 में 2,202 पदों के लिए भर्ती निकाली गई, जिसकी परीक्षा सम्पन्न हो चुकी है और दस्तावेज सत्यापन प्रक्रिया जारी है। वर्ष 2025 में 3,225 पदों की नई भर्ती निकाली गई है, जिन पर चयनित शिक्षक शीघ्र ही सेवाएं देंगे। वरिष्ठ अध्यापक भर्ती के तहत वर्ष 2024 में 2,129 पद तथा 2025 में 6,500 पदों की भर्ती निकाली गई है, जो प्रक्रियाधीन हैं। शिक्षा मंत्री प्रश्नकाल के दौरान विधायक थावर चन्द द्वारा पूछे गए पूरक प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार ने 6,264 विद्यालयों को क्रमोन्नत तो किया, लेकिन एक भी पद सृजित नहीं किया। इसी प्रकार महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खोल दिये, लेकिन उनके लिए भी शिक्षकों की भर्ती नहीं की गई।

सरकार एससी, एसटी वर्ग के हितों के प्रति संवेदनशील

उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार एससी, एसटी एवं ओबीसी वर्ग के हितों के प्रति संवेदनशील है। यदि किसी प्रकार के बैकलॉग पद शेष हैं तो आगामी भर्तियों में समायोजित कर उन्हें भरने का प्रयास किया जाएगा। इससे पहले सदस्य के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में शिक्षा मंत्री ने प्रदेश में स्कूल शिक्षा के अंतर्गत संचालित राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों के श्रेणीवार एवं विषयवार रिक्त पदों की जानकारी सदन में प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि माध्यमिक शिक्षा में प्राध्यापक एवं वरिष्ठ अध्यापक के पद 50 प्रतिशत पदोन्नति तथा 50 प्रतिशत सीधी भर्ती से भरे जाते हैं, जबकि प्रारंभिक शिक्षा में अध्यापक लेवल प्रथम एवं द्वितीय (विभिन्न विषय) के 100 प्रतिशत पद सीधी भर्ती से, प्रचलित सेवा नियमों के प्रावधानों के अंतर्गत भरे जाते हैं।

जिला परिषद् एवं पंचायत समिति सदस्यों को आभा कार्ड के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाएं

पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने शुक्रवार को विधानसभा में कहा कि जिला परिषद् एवं पंचायत समिति सदस्य प्रदेश में संचालित आभा कार्ड (आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता) के माध्यम से प्रदान की जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि जिला परिषद् एवं पंचायत समिति सदस्यों को मासिक वेतन देने का वर्तमान में कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है। इन सदस्यों को नियमानुसार भत्ते दिये जाने का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि प्रस्ताव प्राप्त होने पर इस विषय पर विचार किया जाएगा। पंचायतीराज मंत्री प्रश्नकाल के दौरान सदस्य बहादुर सिंह द्वारा इस संबंध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष की बजट घोषणा के तहत ऐसे असहाय, विमन्दित, लावारिस रोगी जिन्हें दस्तावेजों के अभाव में समुचित चिकित्सा सुविधा का लाभ नहीं मिल पाता है, उन्हें मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना एवं निरोगी राजस्थान योजना के अन्तर्गत निःशुल्क चिकित्सा सुविधा का लाभ दिया जाएगा। इससे पहले विधायक के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में पंचायतीराज मंत्री ने बताया कि पंचायतीराज के जनप्रतिनिधियों को आरजीएचएस योजना में सम्मिलित करने के संबंध में वर्तमान में कोई प्रस्तीव विचाराधीन नहीं है।

प्रदेश में लाइसेंस एवं वाहनों से संबंधित अधिकांश सेवाएं ऑनलाइनः बैरवा

उपमुख्यमंत्री एवं परिवहन मंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने शुक्रवार को विधानसभा में बताया कि वर्तमान राज्य सरकार द्वारा सपोटरा से पहली बार वातानुकूलित बस सेवाएं शुरू की गई है। उन्होंने कहा कि भविष्य में सपोटरा में उप परिवहन कार्यालय खोलने पर प्राथमिकता से विचार किया जाएगा। डॉ. बैरवा ने कहा कि राज्य सरकार वंचित क्षेत्रों में परिवहन सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश के आमजन की सुविधा के लिए लाइसेंस एवं वाहनों से संबंधित अधिकांश सेवाएं ऑनलाइन कर दी गई हैं, जिससे आमजन को अब परिवहन संबंधी कार्यों के लिए जिला मुख्यालयों तक जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उपमुख्यमंत्री सदस्य श्री हंसराज मीणा द्वारा पूछे गए पूरक प्रश्न का जवाब दे रहे थे। उन्होंने बताया कि सपोटरा पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल तक वातानुकूलित बस सेवा से वंचित था। वर्तमान सरकार द्वारा सपोटरा से एसी बस सेवा शुरू की है। उन्होंने कहा कि आगामी समय में राजस्थान पथ परिवहन निगम के बस बेड़े में और बसें शामिल की जाएंगी, जिसके बाद सपोटरा से त्रिनेत्र गणेश जी, सवाई माधोपुर के लिए बस सेवा का संचालन शुरू किया जाएगा। इससे पूर्व सदस्य द्वारा पूछे गए मूल प्रश्न के लिखित जवाब में उपमुख्यमंत्री ने बताया कि वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता के अभाव में सपोटरा (करौली) में नए उप परिवहन कार्यालय खोलने का कोई प्रस्ताव वर्तमान में विचाराधीन नहीं है।

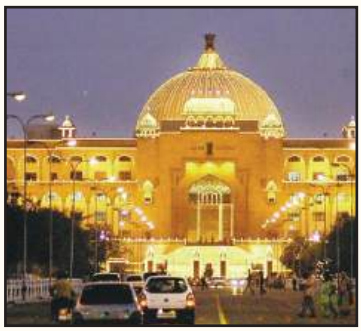

महावीर इंटरनेशनल कुचामन: सेवा के साथ मनाई गई वैवाहिक वर्षगांठ

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया

'सबकी सेवा, सबको प्यार' और 'जियो और जीने दो' के ध्येय वाक्य के साथ मानवता की सेवा में जुटी संस्था महावीर इंटरनेशनल, कुचामन के सदस्यों ने एक बार फिर सामाजिक सरोकार की अनूठी मिसाल पेश की है। संस्था की प्रेरणा से सदस्य अपने जीवन के विशेष अवसरों जैसे जन्मदिन और वर्षगांठ को 'अपना घर' आश्रम, गोसेवा और अन्नपूर्णा रसोई के माध्यम से जरूरतमंदों की सेवा कर मनाते आ रहे हैं।

50वें और 48वें बसंत का सेवापूर्ण उत्सव

'दोस्ती से सेवा, सेवा से दोस्ती' की भावना को चरितार्थ करते हुए आज दो परिवारों ने अपनी खुशियाँ 'अपना घर' के प्रभुजी (आवासित असहाय जनों) के साथ साझा कीं। वीर तेजकुमार एवं वीरा शकुंतला बडजात्याः इन्होंने अपनी शादी के 50वें बसंत की शुरूआत के अवसर पर सेवा कार्य किया।

वीर सोहनलाल एवं वीरा शारदा वर्माः इन्होंने अपनी शादी के 48 बसंत पूर्ण होने पर प्रभुजी की सेवा का संकल्प लिया। दोनों दंपत्तियों ने आश्रम में बीमार, लाचार और असहाय प्रभुजी को भोजन करवाकर और उनका मुंह मीठा कराकर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने एक-दूसरे को माला पहनाकर अपनी वर्षगांठ सादगी और सेवा भाव से मनाई।

सम्मान एवं सहभागिता

इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों ने वर्षगांठ मनाने वाले जोड़ों का तिलक, माला और साफा पहनाकर बहुमान किया। कार्यक्रम में वीर रामावतार गोयल, अजित पहाडिया, सुरेश कुमार जैन, अशोक अजमेरा, सुरेंद्र सिंह दीपपुरा सहित वीरा सरोज, मंजु, सुनीता गंगवाल, सरला खटोड, कल्पना, रीतू बंसल एवं श्रीमती सुशीला पहाडिया, राजकुमारी जैन, पार्वती, पतासी, ओम कंवर, रवि सोनी और सम्यक जैन उपस्थित रहे।

कृतज्ञता ज्ञापन

संस्था के वीर सुभाष पहाडिया ने सभी सहयोगकताओं और सेवादारों की सराहनीय सेवाओं के लिए आभार व्यक्त किया और धन्यवाद ज्ञापित किया।

अन्तर्मना त्रि-दिवसीय कल्पतरु शान्तिनाथ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर सिंह द्वार का भव्यातिभव्य उद्घाटन समारोह आयोजित

सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

सिद्धों की पावन भूमि तीर्थराज सम्मेद शिखर में अन्तर्मना त्रि-दिवसीय कल्पतरु शान्तिनाथ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर सिंह द्वार के भव्यातिभव्य उद्घाटन समारोह का गरिमामय आयोजन 20 से 22 फरवरी 2026 तक किया जाएगा। इस अवसर पर गुरुदेव के अनन्य भक्त श्री मुकेश-हरिता जैन (चेन्नई) अपने वैवाहिक जीवन के 25वें वर्ष में प्रवेश के पावन अवसर पर सिद्धभूमि सम्मेद शिखर में आयोजित इस त्रिदिवसीय भगवान वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव में सौधर्म इन्द्र के रूप में पंच परमेष्ठी भगवान की आराधना एवं वंदना करेंगे। आयोजन समिति ने श्रद्धालुओं से आह्वान किया है कि वे इस अन्तर्मना त्रिदिवसीय भगवान महोत्सव में सहभागिता कर इसे अपने जीवन का आध्यात्मिक महोत्सव बनाएं तथा सुख, शांति, समृद्धि एवं सम्यक्त्व की निधि प्राप्त करें।

प्रवक्ता नरेंद्र अजमेरा, पीयूष कासलीवाल एवं रोमिल पाटणी (सोनकच्छ) ने जानकारी देते हुए बताया कि त्रि-दिवसीय अन्तर्मना भगवान वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे।

कार्यक्रम विवरण इस प्रकार रहेगा

शुक्रवार, 20 फरवरी 2026: प्रातः 7:20 बजे से मंगलाचरण, सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, मण्डप शुद्धि, ध्वजारोहण, दिक्पाल स्थापना, अभिषेक विधि, शांतिधारा, देव प्रतिष्ठार्थिका, मण्डल विधान, मंत्र जाप अनुष्ठान एवं वेदी स्वरूप दर्शन आयोजित होंगे।

शनिवार, 21 फरवरी 2026: प्रातः 7:00 बजे से अभिषेक, नित्य पूजा-पाठ, घटयात्रा, 84 मंत्रों से वेदी शुद्धि, कलश शुद्धि, मंदिर शुद्धि, यज्ञ मण्डल विधान एवं पूर्णाहुति का आयोजन किया जाएगा।

रविवार, 22 फरवरी 2026: प्रातः 7:00 बजे से अभिषेक एवं पूजादि के साथ विश्व शांति महायज्ञ अनुष्ठान होगा। प्रातः 10:00 बजे कलशारोहण, ध्वजारोहण, विसर्जन पाठ तथा विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी।

त्रि-दिवसीय अन्तर्मना महोत्सव के प्रमुख पात्र के रूप में सौधर्म इन्द्र, कल्पतरु शान्तिनाथ जिनालय द्वार उद्घाटनकर्ता एवं महाप्रसाद लाभार्थी परिवार कुबेर इन्द्र (शिखर कलशारोहणकर्ता) के रूप में श्रीमती तेजीदेवी, श्री मुकेश-हरिता जैन, देवेश ठोलिया परिवार (ठाकुरगंज, चेन्नई) तथा श्रीमती बिमला देवी गंगवाल, राजेश-आभा वास्तु, अनिकेत, धृति गंगवाल एवं समस्त गंगवाल परिवार (कोलकाता) रहेंगे। महायज्ञनायक एवं ध्वजारोहणकर्ता सहयोगी परिवारों में श्रीमती मनोरमा देवी, श्री रोहित-दिव्या जैन, धान्या जी, रोहन जैन (चेन्नई), श्री त्रिलोकचंद-आंची देवी सेठी, संजय-संगीता, डॉ. पंकज-डॉ. रश्मि, मिलिंद-निकिता, दिव्यांश सहित समस्त सेठी परिवार (किशनगंज, बिहार) तथा श्री मनोज-पायल जी, मानव जी एवं गोल्डी जी चौधरी परिवार शामिल रहेंगे।

तीर्थराज सम्मेद शिखर सिंह द्वार के लाभार्थी परिवार के रूप में श्री अशोक-कमलेश जैन, राहुल-नेहा जैन परिवार (बड़ौदा) स्व. श्री पूरणमलजी जैन (पाटनी) की स्मृति में, सौजन्य से श्रीमती कंचन देवी, पवन-शशि, दौलत-रोशनी जैन (पाटनी), आशिका फाउंडेशन (कोलकाता) रहेंगे।

नरेंद्र अजमेरा, पीयूष कासलीवाल (औरंगाबाद) एवं रोमिल पाटणी, सोनकच्छ

दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी: जगत कल्याण के लिए हुई महाशांतिधारा, शिलादान का मिल रहा स्वर्णिम अवसर

अशोकनगर. शाबाश इंडिया

अंचल के प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी में विराजमान 'खड़े बाबा' भगवान आदिनाथ के दरबार में भक्ति का सैलाब उमड़ रहा है। परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद से यहाँ निरंतर जगत कल्याण की मंगल कामना के साथ धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हो रहे हैं। सौधर्म इंद्र बनकर भक्तों ने अर्जित किया पुण्य शुक्रवार को भगवान आदिनाथ का भव्य कलशाभिषेक और महाशांतिधारा संपन्न हुई। इसमें इंद्र बनने का सौभाग्य निम्नलिखित भक्तों को प्राप्त हुआ:

सौधर्म इंद्र: विजय धुर्रा (मंत्री, जैन समाज अशोकनगर)

ईशान इंद्र: शैलेंद्र 'दद्दा' (मंत्री, दर्शनोदय थूवोनजी)

सनत इंद्र: प्रदीप जैन रानी पिपरई

महेंद्र इंद्र: सुमित जैन

असीमकालीन भक्तामर विधान से जुड़ रहे श्रद्धालु

जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने बताया कि मुनि श्री सुधासागर जी महाराज की प्रेरणा से इस तीर्थ का कायाकल्प हो रहा है। अशोकनगर, पिपरई, मुंगावली और शाढ़ौरा सहित दूर-दराज के क्षेत्रों से भक्त यहाँ आकर असीमकालीन भक्तामर विधान में सम्मिलित हो रहे हैं। यह विधान आत्मिक शांति और विश्व समृद्धि का केंद्र बना हुआ है। इच्छुक श्रद्धालु कमेटी से संपर्क कर इस पुण्य यात्रा का हिस्सा बन सकते हैं।

मंदिर निर्माण में शिला स्थापना का सुअवसर

क्षेत्र कमेटी के पूर्व महामंत्री विपिन सिंघई ने श्रद्धालुओं से तीर्थ के विकास में सहभागी बनने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि यहाँ मंदिरों की एक विशाल श्रृंखला तैयार हो रही है। भक्त यहाँ सामान्य शिला के साथ-साथ बीजाक्षर शिला और पंच बीजाक्षर शिला स्थापित कर अपनी आस्था को अमर बना सकते हैं। निश्चित राशि समर्पित कर कोई भी भक्त 'परम संरक्षक' के रूप में इस पावन तीर्थ से जुड़ सकता है। कार्यक्रम के अंत में कमेटी द्वारा सभी पुण्यार्जक परिवारों का स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर संजय मोदी, मोनू जैन, सुमित जैन सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

आर्यिका श्रुत मति एवं सुबोध मति माताजी का निवाई में मंगल प्रवेश, दर्शन को उमड़ा जनसैलाब

निवाई. शाबाश इंडिया

सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में आर्यिका रत्न आदिमति माताजी की शिष्या आर्यिका श्रुतमति एवं सुबोध मति माताजी ससंघ का निवाई शहर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। गाजे-बाजे और जयकारों के साथ हुई इस अगवानी में बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

सुख-शांति की खोज पर माताजी के प्रेरणादायी विचार

शांतिनाथ जिनालय में दर्शन के उपरांत आयोजित धर्मसभा में आर्यिका श्रुतमति माताजी ने संसार की वास्तविक स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा: संसार का प्रत्येक प्राणी सुख-शांति की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील है। मनुष्य का हर कदम आनंद की खोज में आगे बढ़ता है, लेकिन विडंबना यह है कि वह जितना शांति के सोपानों पर चढ़ना चाहता है, उतना ही प्रतिकूलताओं की ठोकरें खाकर नीचे गिर जाता है। मनुष्य जितनी सुख की आकांक्षा करता है, आत्मज्ञान के अभाव में उतना ही दुख की ज्वालाओं में झुलस जाता है।

भक्तिमय अगवानी और निवेदन

मीडिया प्रभारी विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि शुक्रवार प्रातः बनस्थली में समाज के प्रमुख पदाधिकारियों ने माताजी के समक्ष श्रीफल भेंट कर निवाई प्रवास का निवेदन किया। इस अवसर पर अध्यक्ष महेंद्र चंवरिया, अशोक भाणजा, दिनेश चंवरिया, शंभु कठमाणा, रवि भाणजा और राजेश गिन्दोडी. सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे। अगवानी करने वालों में अतुल ठोलिया, नेमीचंद सिरस, ज्ञानचंद सोगानी, पूरणमल जैन, प्रकाश चंद सेदरिया, बाबूलाल जैन, सुरेश माधोराजपुरा, विमल पाटनी, विवेक जैन, नवरत्न टोंग्या, आशीष चंवरिया, राजेन्द्र सेदरिया, दीपक पराणा, पदम सोगानी और अनंत चंवरिया सहित सकल जैन समाज के महिला-पुरुष व युवा शक्ति शामिल थी।

परिदृश्य

स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और नैतिकता पर प्रहार

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

तंबाकू का सेवन केवल एक व्यक्तिगत व्यसन नहीं, बल्कि एक वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपदा बन चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रतिवर्ष लगभग 80 लाख लोग तंबाकू जनित रोगों के कारण असमय काल कवलित हो जाते हैं। भारत जैसे विशाल देश में यह स्थिति और भी भयावह है, जहां कैंसर, हृदय रोग और श्वसन तंत्र की जटिलताओं के कारण लाखों परिवार उजड़ रहे हैं। वर्तमान परिदृश्य में यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक है कि क्या केवल कर वृद्धि और चेतावनी संदेश पर्याप्त हैं, या अब समय आ गया है कि भारत में तंबाकू पर पूर्ण विधायी प्रतिबंध लागू किया जाए? तंबाकू का प्रभाव शरीर के हर अंग पर घातक होता है। मुख, गला और फेफड़ों का कैंसर प्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़ा है। भारत में विशेषकर 'धुआं रहित तंबाकू' (गुटखा, पान मसाला) के कारण मुख के कैंसर के मामलों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, 'परोक्ष धूम्रपान' (पैसिव स्मोकिंग) के कारण निर्दोष बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग भी गंभीर जोखिम का सामना कर रहे हैं। यह न केवल गैर-संचारी रोगों को जन्म देता है, बल्कि शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर टीबी जैसी संक्रामक बीमारियों का मार्ग भी प्रशस्त करता है। सामाजिक दृष्टि से तंबाकू निर्धनता के चक्र को गहरा करता है। जब परिवार का मुख्य अर्जनकर्ता बीमार होता है, तो पूरा परिवार आर्थिक और मानसिक संकट में फंस जाता है। नैतिक दृष्टिकोण से देखें तो तंबाकू उद्योग का अस्तित्व ही प्रश्नचिह्न के घेरे में है। युवाओं को आकर्षित करने के लिए भ्रामक विज्ञापन और फिल्मों में धूम्रपान का महिमामंडन आने वाली पीढ़ी के भविष्य से खिलवाड़ है। पर्यावरणीय स्तर पर भी, तंबाकू की खेती और सिगरेट के अवशेष (बट्स) पारिस्थितिकी तंत्र को भारी क्षति पहुंचा रहे हैं। अक्सर तंबाकू से प्राप्त होने वाले राजस्व का तर्क दिया जाता है, परंतु व्यापक विश्लेषण कुछ और ही कहानी कहता है।

संपादकीय

मजबूत मातृभाषा : युवाओं की भूमिका निर्णायक

मातृभाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि किसी समाज की संस्कृति, परंपरा और बौद्धिक विरासत की पहचान होती है। यह व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं व संस्कृतियों को समझने का मार्ग प्रशस्त करती है। मातृभाषा में संवाद सहज और प्रभावी होता है, जिससे सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। यही कारण है कि भाषाई विविधता को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास

किए जा रहे हैं, ताकि लोग एक-दूसरे की भाषाओं को जानने और सीखने के अवसर प्राप्त कर सकें। भाषा के महत्व को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा हर वर्ष 21 फरवरी को ''अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस'' मनाया जाता है। इसका उद्देश्य भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना, बहुभाषावाद को प्रोत्साहित करना तथा दुनिया भर की मातृभाषाओं के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करना है। यह दिवस भाषाओं का उत्सव होने के साथ-साथ उनके अस्तित्व को बचाए रखने की जिम्मेदारी का भी स्मरण कराता है। वर्ष 2026 की थीम 'बहुभाषी शिक्षा पर युवाओं की राय' है, जो भाषाओं के संरक्षण और पुनर्जीवन में युवाओं तथा प्रौद्योगिकी की भूमिका को रेखांकित करती है। आज डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने भाषाओं के लिए नए अवसर भी दिए हैं और चुनौतियां भी पैदा की हैं। यदि युवा तकनीक का उपयोग स्थानीय भाषाओं के साहित्य, ज्ञान और संस्कृति को डिजिटल मंचों पर लाने में करें, तो अनेक लुप्तप्राय भाषाओं को नया जीवन मिल सकता है। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की शुरूआत भी भाषा के प्रति युवाओं के समर्पण से जुड़ी है। वर्ष 1952 में ढाका में बांग्ला भाषा आंदोलन के दौरान कई छात्रों ने अपनी मातृभाषा के सम्मान के लिए प्राणों का बलिदान दिया था। उनकी स्मृति में कनाडा में रहने वाले बांग्लादेशी रफीकुल इस्लाम के प्रस्ताव पर यूनेस्को ने 17 नवम्बर 1999 को 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस घोषित किया, जिसे पहली बार वर्ष 2000 में मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार दुनिया में लगभग सात हजार भाषाएं बोली जाती हैं, लेकिन इनमें से बड़ी संख्या संकट में है। करीब 40 प्रतिशत भाषाएं लुप्तप्राय मानी जा रही हैं और डिजिटल दुनिया में सौ से भी कम भाषाओं का व्यापक उपयोग होता है। वैश्वीकरण और बेहतर रोजगार की दौड़ में विदेशी भाषाओं की बढ़ती प्राथमिकता भी मातृभाषाओं के सामने चुनौती बन रही है। भारत में भी भाषाओं के संरक्षण के लिए कई पहलें की जा रही हैं। लुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा और संरक्षण योजना, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा आधारित शिक्षा पर जोर इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 तथा संविधान के अनुच्छेद 350ए में भी प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराने की व्यवस्था का उल्लेख है। दरअसल, प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में मिलने से बच्चों की समझ, आत्मविश्वास और रचनात्मकता का विकास होता है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

तकनीकी शक्ति का नया वैश्विक संतुलन

कांतिलाल मांडोह

बीजिंग में आयोजित 'स्प्रिंग फेस्टिवल गाला' के भव्य मंच पर जब मानवाकार रोबोटों (ह्यूमनॉइड रोबोट्स) ने बच्चों के साथ ताल से ताल मिलाकर नृत्य किया और मार्शल आर्ट की सटीक मुद्राएं दिखाईं, तो विश्व स्तब्ध रह गया। तलवारों की चमक और फुर्तीले व्यायाम के बीच एक भी यंत्र का संतुलन न बिगड़ना केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि चीन की तकनीकी परिपक्वता का सार्वजनिक उद्घोष था। यह मंच वर्षों से चीन की वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रदर्शन का माध्यम रहा है, किंतु इस बार संदेश स्पष्ट था चीन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और स्वचालन की वैश्विक दौड़ में निर्णायक बढ़त बना चुका है। इन रोबोटों के पीछे 'यूनिट्री' जैसी उभरती तकनीकी कंपनियां खड़ी हैं, जिन्होंने अत्यंत अल्प समय में वैश्विक पहचान बनाई है। पिछले वर्षों की तुलना में इस बार रोबोटों की चाल-ढाल, प्रतिक्रिया क्षमता और संतुलन में क्रांतिकारी सुधार देखा गया। यह प्रगति केवल हार्डवेयर का परिणाम नहीं, बल्कि उन्नत एआई सॉफ्टवेयर का प्रमाण है। 'मशीन लर्निंग' और 'रियल-टाइम सेंसिंग' जैसी तकनीकों ने इन यंत्रों को जटिल परिस्थितियों में भी मानव की भांति व्यवहार करने योग्य बनाया है। स्पष्ट है कि चीन अब रोबोट को प्रदर्शन की वस्तु से आगे ले जाकर उत्पादन और सेवा क्षेत्र के भरोसेमंद सहयोगी के रूप में ढाल रहा है। चीन की इस सफलता के पीछे उसकी सुदृढ़ औद्योगिक नीति है। बीजिंग ने रोबोटिक्स को राष्ट्रीय प्राथमिकता घोषित किया है। यह पहल केवल प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं है, बल्कि चीन की जनसांख्यिकीय चुनौती का समाधान भी है। तेजी से वृद्ध होती जनसंख्या और घटती श्रम शक्ति के कारण भविष्य की उत्पादन क्षमता संकट में पड़ सकती है। ऐसे में ये मानवाकार रोबोट कारखानों, खेतों और सेवा क्षेत्रों में मानव श्रम की कमी को पूरा करने के प्रभावी साधन माने जा रहे हैं। सरकार का लक्ष्य 'एआई प्लस मैन्युफैक्चरिंग' मॉडल के माध्यम से उत्पादन दक्षता को नई ऊंचाइयों पर ले जाना है। वैश्विक परिदृश्य में चीन का सीधा मुकाबला अमेरिका और जापान से है। जहां अमेरिका 'सिलिकॉन वैली' के नवाचार और निजी निवेश के लिए जाना जाता है, वहीं जापान दशकों से औद्योगिक रोबोटिक्स का नेतृत्व कर रहा है। एलोन मस्क जैसे उद्यमी भी चीनी कंपनियों को गंभीर प्रतिद्वंद्वी मानते हैं। आज वैश्विक स्तर पर निर्मित हो रहे मानवाकार रोबोटों का एक बड़ा हिस्सा चीन से आ रहा है। इसकी मुख्य वजह चीन का संपूर्ण औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र है बैटरी और मोटर निर्माण से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स तक की सुलभ आपूर्ति श्रृंखला उसे कम लागत में बड़े पैमाने पर उत्पादन की सुविधा प्रदान करती है। चीन के इस उत्थान ने एशिया और पश्चिम के समीकरण बदल दिए हैं। दक्षिण कोरिया और यूरोप अब अपने विनिर्माण क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए स्वचालन पर अधिक निवेश कर रहे हैं। हालांकि, इस विकास के साथ कुछ चिंताएं भी जुड़ी हैं। रोबोटों के बढ़ते उपयोग से पारंपरिक रोजगार प्रभावित हो सकते हैं, जिसके लिए बड़े स्तर पर 'कौशल विकास' की आवश्यकता होगी। साथ ही, सुरक्षा और रक्षा के क्षेत्र में इन तकनीकों के नैतिक उपयोग पर भी वैश्विक बहस अनिवार्य है। स्प्रिंग फेस्टिवल गाला में रोबोटों का यह प्रदर्शन तकनीकी युग के नए वैश्विक संतुलन का संकेत है। चीन ने सिद्ध किया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और यांत्रिक अभियांत्रिकी का संयोजन वास्तविक दुनिया को कैसे बदल सकता है। अमेरिका और जापान अब भी शक्तिशाली हैं, किंतु चीन ने अपनी दीर्घकालिक दृष्टि और राज्य-उद्योग समन्वय से प्रतिस्पर्धा को एक नए धरातल पर खड़ा कर दिया है।

पदमपुरा पंचकल्याणक: तप कल्याणक पर वैराग्य के दृश्यों ने किया भाव-विभोर, आज मनेगा केवलज्ञान कल्याणक

जयपुर/पदमपुरा. शाबाश इंडिया

अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में नवनिर्मित खड़गासन चौबीसी जिन प्रतिमाओं के पंचकल्याणक एवं पद्मबल्लभ शिखर कलशारोहण महोत्सव के तीसरे दिन 'तप कल्याणक' की क्रियाएं श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुईं। वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज, गणिनी आर्यिका सरस्वती माताजी एवं स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ के सानिध्य में हजारों श्रद्धालुओं ने इन मांगलिक क्रियाओं के दर्शन किए।

नीलांजना का नृत्य और वैराग्य का उदय

दोपहर में महाराजा नाभिराय का दरबार सजा, जिसमें तीर्थंकर बालक के विवाह, राज्याभिषेक और चक्रवर्ती दिग्विजय जुलूस के दृश्य जीवंत हो उठे। महोत्सव का मुख्य आकर्षण नीलांजना का नृत्य रहा। नृत्य के दौरान नीलांजना के मूर्छित होते ही महाराजा ऋषभदेव को संसार की नश्वरता का बोध हुआ और उन्होंने गृह त्याग कर मुनि दीक्षा ग्रहण की। गुवाहाटी के विनोद-श्रेया सेठी ने प्रभु को प्रथम पिच्छी-कमंडल भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आचार्य श्री के मंगल प्रवचन

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ने कहा भावों की विशुद्धि ही जीवन की उज्ज्वलता तय करती है। वैभव कमाने से नहीं, बल्कि पुण्य के फल से मिलता है। यदि जीवन में संयम हो, तो पाप का खाता बंद हो जाता है। मुनि प्रभव सागर जी एवं आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ने भी तप कल्याणक के महत्व पर प्रकाश डाला।

किसना डायमंड एंड गोल्ड शोरूम पर रक्तदान शिविर: 22 यूनिट रक्त संग्रहित

जयपुर. शाबाश इंडिया

सामाजिक सरोकार की अपनी परंपरा को निभाते हुए हरि कृष्ण ग्रुप के तत्वावधान में आज शुक्रवार, 22 फरवरी को एम.आई. रोड स्थित 'किसना डायमंड एंड गोल्ड ज्वेलरी' शोरूम पर एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक के तकनीकी सहयोग से शोरूम परिसर के बाहर खड़ी 'रक्तदान वाहिनी' (मोबाइल वैन) में लगाया गया।

प्रमुख अतिथियों द्वारा उत्साहवर्धन:

शिविर के दौरान स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक के प्रबंध निदेशक आनंद अग्रवाल एवं सुप्रसिद्ध समाजसेवी झामन टेकचंदानी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने रक्तदाताओं से भेंट कर उनका उत्साहवर्धन किया और इस पुनीत कार्य की सराहना की।

प्रथम बार रक्तदान का उत्साह:

शिविर का शुभारंभ शोरूम मैनेजर सुरेंद्र यादव ने स्वयं रक्तदान कर किया। शिविर में कुल 22 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। इस आयोजन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि कुल रक्तदाताओं में से 15 युवाओं ने पहली बार रक्तदान कर समाज सेवा का संकल्प लिया। शोरूम प्रबंधन ने सभी रक्तदाताओं और स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक की टीम का आभार व्यक्त किया।

दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, झुमरीतिलैया में आदिनाथ एवं नेमिनाथ भगवान का 91वीं वर्ष पूर्णता पर भव्य महामस्तिकाभिषेक सम्पन्न

झुमरीतिलैया. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन समाज के सानिध्य में श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, झुमरीतिलैया में विराजमान जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 श्री आदिनाथ भगवान तथा 22वें तीर्थंकर 1008 श्री नेमिनाथ भगवान की पाषाण प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा के 91 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भव्य महामस्तिकाभिषेक का आयोजन किया गया। अयोध्या में जन्मे अष्टापद-बद्रीनाथ वाले प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ एवं गुजरात के गिरनार पर्वत पर पंचकल्याणक प्राप्त करने वाले भगवान नेमिनाथ की प्रतिमाओं का श्रद्धा एवं भक्ति भाव से अभिषेक किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रातः 7 बजे हुई, जब आदिनाथ वेदी से सभी प्रतिमाओं को विधि-विधानपूर्वक बाहर पांडुक शिला पर विराजमान कर सामूहिक अभिषेक किया गया। इस अवसर पर समाज के बड़ी संख्या में पुरुष श्रद्धालु उपस्थित रहे। महामस्तिकाभिषेक रजत कलशों से सम्पन्न कराया गया। अभिषेक के पश्चात विश्व शांति मंत्रों के साथ श्रीजी के मस्तक पर शांतिधारा की गई। साथ ही भक्तामर स्तोत्र के 48 मंत्रों के उच्चारण के साथ श्रद्धालुओं द्वारा एक-एक दीपक भगवान के चरणों में अर्पित किया गया। इसके उपरांत समाजजनों ने अष्टद्रव्य से पूजन सम्पन्न किया। पूजन पश्चात महिलाओं द्वारा भक्ति नृत्य प्रस्तुत करते हुए श्रीफल भगवान के चरणों में अर्पित किया गया तथा सामूहिक आरती की गई। पूरे आयोजन में श्रद्धालुओं की भक्ति और उत्साह देखने योग्य रहा। कार्यक्रम में समाज के कोषाध्यक्ष सुरेंद्र जैन काला, शांति लाल जैन छाबड़ा, जयकुमार जैन गंगवाल, ललित जैन सेठी, सुशील जैन पांड्या, विनोद जैन अजमेरा, अभिषेक जैन गंगवाल, शैलेश जैन छाबड़ा, अजय जैन सेठी, ईशान जैन कासलीवाल, राजकुमार जैन अजमेरा, मोनी जैन सेठी,

अमित जैन गंगवाल, पिंटू जैन सेठी, आनंद जैन पांड्या, संजय जैन गंगवाल सहित महिला संगठन की नीलम जैन सेठी, आशा जैन गंगवाल, सरिता जैन काला सहित सैकड़ों की संख्या में पुरुष एवं महिलाएँ उपस्थित रहे। इस संबंध में जानकारी कोडरमा मीडिया प्रभारी राजकुमार जैन अजमेरा एवं नवीन जैन द्वारा दी गई।

फागी सहित क्षेत्र के जिनालयों में भगवान अरहनाथ का गर्भ कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास से संपन्न

फागी. शाबाश इंडिया

फागी कस्बे सहित आसपास के परिक्षेत्र चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लसाड़िया तथा लदाना के जिनालयों में जैन धर्म के 18वें तीर्थंकर भगवान अरहनाथ का गर्भ कल्याणक महोत्सव भक्तिभाव के साथ मनाया गया।

धार्मिक अनुष्ठानों की धूम

जैन महासभा के राजस्थान मीडिया प्रवक्ता राजाबाबू गोधा ने बताया कि कस्बे के प्राचीन आदिनाथ जिनालय में प्रातः भगवान का अभिषेक एवं सामूहिक शांतिधारा की गई। इसके पश्चात अष्टद्रव्यों से विशेष पूजा-अर्चना की गई। श्रावकों ने गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी, विशुद्धमति माताजी, आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज एवं समाधिस्थ आचार्य विद्यासागर जी महाराज सहित विभिन्न पूवाचार्यों के चरणों में अर्घ्य समर्पित किए। अंत में भगवान अरहनाथ के गर्भ कल्याणक का विशेष अर्घ्य चढ़ाकर विश्व शांति व सुख-समृद्धि की कामना की गई।

भगवान अरहनाथ: एक परिचय

महिला मंडल की कमला कासलीवाल एवं रेखा धमाणा ने भगवान के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि:

जन्म: हस्तिनापुर के राजा सुदर्शन और माता मित्रसेना के यहाँ।

विशेषता: आप 12 चक्रवर्तियों में से 7वें चक्रवर्ती थे।

प्रतीक: आपका प्रतीक चिह्न मछली है।

साधना: 84 हजार वर्ष की आयु वाले प्रभु ने हस्तिनापुर में दीक्षा ली और 16 वर्षों की कठोर साधना के बाद केवलज्ञान प्राप्त किया। आपके 30 गणधर थे तथा यक्ष महेंद्र देव व यक्षिणी विजया देवी थीं।

मोक्ष: चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन सम्मेद शिखर तीर्थ से आपने निर्वाण प्राप्त किया।

इस मांगलिक अवसर पर कैलाश कासलीवाल, पंडित कैलाश कडीला, ओमप्रकाश कासलीवाल, राजेश छाबड़ा, शांतिलाल मित्तल, शिखर गंगवाल, ललित कासलीवाल, एडवोकेट रवि जैन, राजकुमार छाबड़ा, अनिल कासलीवाल, भविक कासलीवाल सहित महिला मंडल से बसन्ती कडीला, चित्रा गोधा, मनभर कासलीवाल, मंजू छाबड़ा, मनीषा, सीमा, अंकिता और मनीषा कडीला सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

बोलखेड़ा पंचकल्याणक महोत्सव

मोक्ष कल्याणक के साथ नवीन वेदियों में भगवान विराजमान

कामां/बोलखेड़ा. शाबाश इंडिया। जम्बूस्वामी की तपोभूमि ग्राम बोलखेड़ा स्थित 'वर्धमान पंच बालयति तीर्थ क्षेत्र' पर आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का समापन भव्य मोक्ष कल्याणक के साथ हुआ। अंतिम दिवस पर अर्हम योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि इस अद्भुत तीर्थ का निर्माण ब्रह्मचारी गोकुल राम जैन की दृढ़ साधना का परिणाम है। मुनिराज ने कहा कि यह भूमि पावन है, जहाँ अंतिम अनुबद्ध केवली जम्बूस्वामी की तपो-ऊर्जा विद्यमान है। उन्होंने भारतवर्ष में इस अनूठी त्रय स्तरीय वेदिका की प्रशंसा करते हुए समाज को इस धरोहर को संभालने की जिम्मेदारी सौंपी।

भक्तिमय समापन और प्रतिमा स्थापना

ट्रस्ट सचिव वेद प्रकाश जैन एवं त्रिलोक जैन ने बताया कि प्रातः मोक्ष कल्याणक के पश्चात हवन एवं नवीन वेदियों में भगवान को विराजमान करने की विधि संपन्न हुई। प्रतिष्ठाचार्य शुभम जैन व धीरज जैन के निर्देशन में पुण्यार्जक परिवारों ने जयकारों के बीच जिनबिम्बों को मस्तक पर धारण कर वेदी में स्थापित किया। कामां से महेश चंद, संजय जैन एवं सुनील जैन सर्राफ परिवार द्वारा भी प्रतिमा विराजमान की गई। महोत्सव की पूर्णता पर मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज का ससंघ सीकरी के लिए पद विहार हुआ। पुष्पेंद्र जैन ने बताया कि शनिवार सुबह मुनि संघ का सीकरी में मंगल प्रवेश होगा। कार्यक्रम के अंत में समिति अध्यक्ष गोकुल राम जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया व मीडियाकर्मियों का सम्मान किया गया।

अयोग्य नेतृत्व का परिणाम: जब बागडोर गलत हाथों में चली जाती है

नितिन जैन

किसी भी समाज, संगठन या साधु समुदाय की दिशा और दशा उसके नेतृत्व पर निर्भर करती है। नेतृत्व केवल पद या उपाधि का नाम नहीं है; यह जिम्मेदारी, दूरदृष्टि, त्याग और संतुलन का पर्याय है। जब बागडोर किसी योग्य, धैर्यवान और सिद्धांतनिष्ठ व्यक्ति के हाथ में होती है, तब समाज प्रगति करता है, मतभेद संवाद से सुलझते हैं और व्यवस्था में अनुशासन बना रहता है। इसके विपरीत, जब यही बागडोर किसी अयोग्य, स्वार्थी या अनुभवहीन व्यक्ति के हाथों में चली जाती है, तो वहीं से पतन और विनाश का आरंभ होता है। अयोग्य नेतृत्व की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह 'विवेक' के स्थान पर 'अहंकार' को प्राथमिकता देता है। ऐसा नेतृत्व रचनात्मक आलोचना को शत्रुता समझता है और स्वस्थ परामर्श को चुनौती मानता है। धीरे-धीरे वह अपने चारों ओर चाटुकारों की भीड़ एकत्र कर लेता है, जिससे सही और गलत का अंतर धुंधला पड़ जाता है। परिणामस्वरूप, जो समाज या साधु समुदाय आदर्श और संयम का प्रतीक होना चाहिए, वह आंतरिक गुटबाजी, अविश्वास और भ्रम का शिकार हो जाता है। इतिहास और वर्तमान दोनों इस सत्य के साक्षी हैं कि नेतृत्व की योग्यता केवल वाणी से नहीं, बल्कि व्यवहार, निर्णय और त्याग से सिद्ध होती है। यदि आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई व्यक्ति पद की महत्वाकांक्षा में मयार्दा भूल जाए, या सामाजिक प्रतिनिधि व्यक्तिगत लाभ के लिए सामूहिक हितों की अनदेखी करे, तो इसके परिणाम दूरगामी और घातक होते हैं। अयोग्य नेतृत्व समाज की ऊर्जा को 'निर्माण' में नहीं, बल्कि 'विवादों' में व्यर्थ कर देता है। वह समस्याओं का समाधान खोजने के बजाय उन्हें दबाने या ढकने का प्रयास करता है, जिससे सत्य गौण हो जाता है और असंतोष बढ़ता है। श्रद्धा कमजोर पड़ती है, अनुशासन शिथिल होता है और विशेषकर युवाओं के मन में व्यवस्था के प्रति प्रश्न और विरक्ति पैदा होने लगती है। इसके विपरीत, एक योग्य नेतृत्व पारदर्शिता को अपनाता है, आलोचना को सुधार का माध्यम मानता है और स्वयं आचरण प्रस्तुत कर मार्ग दिखाता है। अतः समाज को भी सदैव सजग रहना चाहिए कि वह केवल भावनाओं या बाहरी आकर्षण के आधार पर किसी को बागडोर न सौंप दे, बल्कि उसकी योग्यता, चरित्र और निस्वार्थ भाव को गहराई से परखे। नेतृत्व की कुर्सी 'सम्मान' की नहीं, बल्कि 'सेवा' की वेदी है। यदि इस मूल सत्य को भुला दिया गया, तो पतन निश्चित है। अंततः किसी भी समुदाय की रक्षा बाहरी आडंबर से नहीं, बल्कि आंतरिक शुचिता, ईमानदारी और योग्य नेतृत्व से ही संभव है। जब तक नेतृत्व में विनम्रता, विवेक और उत्तरदायित्व का वास रहेगा, तब तक समाज सुरक्षित रहेगा; जहाँ ये गुण समाप्त हुए, वहीं से विनाश का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

सास-बहु का रिश्ताः प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोग

भारतीय परिवार व्यवस्था में सास-बहु का रिश्ता अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं, बल्कि दो पीढ़ियों का सुंदर संगम है। दुर्भाग्यवश समाज में इस रिश्ते को अक्सर प्रतिस्पर्धा, तकरार और ईर्ष्या के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि यदि इसमें सहयोग, सम्मान और समझ का भाव हो तो परिवार स्वर्ग समान बन सकता है। सास उस घर की आधारशिला होती है, जिसने वर्षों तक परिवार को संभाला, संस्कारों की नींव रखी और जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। वहीं बहु उस घर में नए विचार, नई ऊर्जा और नई आशाएँ लेकर आती है। यदि सास अपने अनुभव का आशीर्वाद दे और बहु सम्मान व अपनत्व का भाव बनाए रखे, तो दोनों मिलकर परिवार को सशक्त और समृद्ध बना सकती हैं। अक्सर मतभेद पीढ़ियों के अंतर के कारण उत्पन्न होते हैं। सोच, रहन-सहन और जीवनशैली में परिवर्तन स्वाभाविक है। ऐसे में यदि दोनों पक्ष संवाद का मार्ग अपनाएँ, एक-दूसरे की बात धैर्यपूर्वक सुनें और समझने का प्रयास करें, तो समस्याएँ सहज ही सुलझ सकती हैं। प्रतिस्पर्धा की भावना दूरी बढ़ाती है, जबकि सहयोग का भाव निकटता और विश्वास को मजबूत करता है। सास को यह समझना चाहिए कि बहु केवल पुत्रवधू ही नहीं, बल्कि बेटी के समान है, जो अपना घर-परिवार छोड़कर नए वातावरण में आई है। वहीं बहु का भी यह दायित्व है कि वह सास के अनुभव, त्याग और जीवन-संघर्षों का सम्मान करे। सम्मान, धैर्य और प्रेम—ये तीन आधार स्तंभ इस रिश्ते को मजबूत बनाते हैं। आज आवश्यकता है कि सास-बहु के रिश्ते को नकारात्मक दृष्टि से देखने के बजाय सकारात्मक सोच अपनाई जाए। परिवार की सुख-शांति और एकता इसी संबंध की मधुरता पर निर्भर करती है। जब सास मार्गदर्शक बने और बहु सहयोगी, तब घर में समरसता, प्रेम और आनंद का वातावरण स्वतः निर्मित हो जाता है। अतः सास-बहु का रिश्ता प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि सहयोग, समझ और स्नेह का होना चाहिए। यही स्वस्थ, संतुलित और खुशहाल परिवार की पहचान है।

—अनिल माथुरः ज्वाला विहार, जोधपुर

महावीर इंटरनेशनल ई-चौपाल का 111वां एपिसोडः 'फेलोशिप' से बढ़ेगा सेवा का कारवां

हैदराबाद/डडूका. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल की 'ई-चौपाल' के 111वें एपिसोड में सदस्यता अभियान, केंद्रों के विस्तार और युवाओं को संगठन से जोड़ने पर सार्थक चर्चा हुई। इस विशेष 'खुली चौपाल' में देश भर के 11 प्रमुख सदस्यों ने 'मिसरी' (वर्चुअल मेंबरशिप) कॉन्सेप्ट पर अपने विचार साझा किए। हैदराबाद से इंटरनेशनल डायरेक्टर (सेंटर डेवलपमेंट) वीरा सीमा शील कुमार जैन ने मुख्य वक्ता के रूप में 'मिसरी' कॉन्सेप्ट पर चर्चा की। उन्होंने एक प्रभावी मंत्र देते हुए कहा– जितनी ज्यादा फेलोशिप बढ़ेगी, उतने ही अधिक लोग सेवा कार्यों से जुड़ेंगे। उन्होंने सुझाव दिया कि लोगों को अनौपचारिक मुलाकातों (जैसे चाय पर चर्चा) के लिए आमंत्रित करें और उन्हें संस्था की गतिविधियों से अवगत कराएं। इससे लोगों की रुचि बढ़ेगी और केंद्रों के विस्तार का मार्ग प्रशस्त होगा। चौपाल का शुभारंभ सुनीता जम्मार द्वारा दिन-रात मेरी, सब सुखी संसार हो... प्रार्थना के साथ किया गया। इंटरनेशनल डायरेक्टर (नॉलेज शेयरिंग) अजीत कोठिया ने बताया कि कार्यक्रम में युवाओं की भागीदारी पर सुमेरसिंह कर्णावत ने व्यापक चर्चा की।

चौपाल को निम्नलिखित सदस्यों ने अपने रचनात्मक सुझावों से समृद्ध कियाः
राज लक्ष्मी भंडारी, प्रदीप टोंग्या, निर्मल सिंघवी, नीलम लोढ़ा और चंद्रा रांका।
इंटरनेशनल डायरेक्टर (पर्यावरण) रवींद्र जैन, विमला रांका, सुरेश गांधी, टोडरमल चोपड़ा, सुनील गांग एवं महेश मूंड। कार्यक्रम का शानदार आगाज और सफल संचालन आरती मूंड द्वारा किया गया। अंत में सुमेरसिंह कर्णावत ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

डडूका में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का द्वितीय समाधि दिवस संपन्नः प्रश्नमंच के माध्यम से दी गई श्रद्धांजलि

डडूका. शाबाश इंडिया

विश्व शांति के प्रणेता, 'मूक माटी' महाकाव्य के रचयिता और गौ-वंश संरक्षण एवं 'इंडिया' को 'भारत' संबोधन दिलाने के प्रबल पक्षधर, राष्ट्र संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का द्वितीय समाधि दिवस दिगंबर जैन पाठशाला के बच्चों एवं प्रेरकों द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

व्यक्तित्व और कृतित्व पर रोचक प्रश्नमंच

कार्यक्रम में अजीत कोठिया के निर्देशन में आचार्य श्री की जीवनी और उनके महान कार्यों पर आधारित एक रोचक प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिनमें से 12 छात्र-छात्राएं विजेता रहे।

प्रेरक प्रसंगों से मिली शिक्षा

प्रारंभ में पाठशाला प्रेरक मनोज एस. शाह ने बच्चों को आचार्य श्री के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग सुनाए, जिससे बच्चे उनके संयमित और तपस्वी जीवन से परिचित हुए। इसके पश्चात सभी ने सामूहिक रूप से आचार्य श्री के चरणों में अर्घ्य समर्पित किया और उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का सफल संचालन अजीत कोठिया द्वारा किया गया एवं अंत में मनोज एस. शाह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जीव दया ही सच्चा धर्मः दिगंबर जैन सोशल ग्रुप ने गौशाला में किया सेवा कार्य

अंबाह. अजय जैन

जीव दया और करुणा की भावना को आत्मसात करते हुए दिगंबर जैन सोशल ग्रुप, अंबाह द्वारा शुक्रवार को परेड चौराहा स्थित छत्रपाली गौशाला में विशेष गौसेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान ग्रुप के सदस्यों ने गौशाला में आश्रित विकलांग एवं असहाय गायों को चारा, गुड़ और आटा खिलाकर पुण्य लाभ अर्जित किया।

गौसेवा सबसे बड़ा पुण्यः महेश चंद व संजीव जैन

यह सेवा कार्य महेश चंद जैन एवं संजीव जैन 'बिल्लू' के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उन्होंने कहा कि 'जियो और जीने दो' का सिद्धांत ही जैन धर्म का मूल आधार है। समाज के हर व्यक्ति को निराश्रित एवं घायल गौवंश की देखभाल के लिए समय-समय पर गौशालाओं में सहयोग अवश्य करना चाहिए।

महिला शक्ति और युवाओं की सहभागिता

श्रीमती मालती जैन ने जीव मात्र के प्रति दया को ही सच्चा धर्म बताया। कार्यक्रम में महिलाओं और युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जो समाज में सेवा का एक सकारात्मक संदेश देता है। सदस्यों ने गौशाला की स्वच्छता का अवलोकन किया और भविष्य में भी निरंतर सहयोग का संकल्प लिया।

इनकी रही सक्रिय उपस्थिति

इस पुनीत कार्य में ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष सुशील जैन, अध्यक्ष संतोष जैन, कार्यकारी अध्यक्ष उपेंद्र जैन पटेल, महामंत्री विकास जैन पांडे, कोषाध्यक्ष नितिन जैन लवली एवं अमित जैन टकसारी सक्रिय रहे। साथ ही कुलदीप जैन, कपिल जैन केपी, अजय जैन बबलू, मनोज जैन सहित महिला सदस्यों में श्रीमती मालती जैन, संध्या जैन, प्रीति जैन एवं रेखा जैन सहित अनेक धर्मावलंबी उपस्थित रहे।

जीवन आह! नहीं, 'वाह!' कहने का नाम है: राष्ट्र-संत ललितप्रभ सागर

उदयपुर. शाबाश इंडिया

राष्ट्र-संत महोपाध्याय श्री ललितप्रभ सागर जी महाराज ने कहा कि जो व्यक्ति हर परिस्थिति में व्यस्त और हर हाल में मस्त रहना सीख जाता है, उसके लिए यह संसार ही बैकुंठ बन जाता है। जीवन परिवर्तनशील है, यहाँ कुछ भी स्थाई नहीं है। जो सुख-दुख, लाभ-हानि और संयोग-वियोग को समभाव से स्वीकार करता है, वही जीवन का वास्तविक आनंद ले पाता है। राष्ट्र-संत शुक्रवार को विद्या निकेतन स्कूल, सेक्टर-4 में आयोजित तीन दिवसीय विराट प्रवचन माला के शुभारंभ पर हजारों श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे।

आर्ट ऑफ लाइफ: मुस्कुराहट में छिपा सुख

संतप्रवर ने कहा कि दुख 'पार्ट ऑफ लाइफ' है, लेकिन उससे मुस्कुराकर पार पाना 'आर्ट ऑफ लाइफ' है। उन्होंने सुखी जीवन का मंत्र देते हुए कहा कि अनुकूलता में तो हर कोई मुस्कुराता है, पर जो प्रतिकूलता में भी मुस्कुराना सीख जाए, वह दुनिया का सबसे सुखी इंसान है। हमारे मुख से 'आह' नहीं, बल्कि हर परिस्थिति में 'वाह!' निकलना चाहिए। उन्होंने कहा कि फोटो के नीचे 'स्वर्गीय' लिखने से कोई स्वर्ग नहीं जाता, बल्कि जीने की कला आ जाए तो जीते-जी जीवन स्वर्ग बन जाता है।

न रोएं खोने का रोना, जो बचा है उसका मनाएं आनंद

जीवन को स्वर्ग बनाने का दूसरा मंत्र देते हुए उन्होंने कहा कि जो खो गया उसका शोक मनाने के बजाय जो पास है, उसका आनंद लें। जो मेरा है वह जाएगा नहीं, और जो चला गया वह मेरा था ही नहीं। आज इंसान के पास भौतिक सुख तो हैं पर सुकून गायब है। बेडरूम में एसी है पर दिमाग में हीटर चल रहा है। पत्थर में ही प्रतिमा छिपी होती है, बस उसे तराशने की जरूरत है। इससे पूर्व डॉ. मुनि श्री शांतिप्रिय सागर जी ने शांति महामंत्र का संगायन कराया।

कार्यक्रम का शुभारंभ राज लोढ़ा, वीरेंद्र सिरोया एवं अन्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। स्वागत गीत जैन महिला मंच की सदस्यों ने प्रस्तुत किया। संयोजक प्रकाश कोठारी ने बताया कि शनिवार को 'जीवन को स्वर्ग कैसे बनाएं' विषय पर विशेष प्रवचन होंगे।

खुला आसमां ही छत उनकी, धरती मां है सिंहासन: बोलखेड़ा पंचकल्याणक में कवियों ने बांधा समां

कामां. शाबाश इंडिया। श्री वर्धमान पंच बालयति तीर्थ क्षेत्र, बोलखेड़ा में अर्हम योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत एक भव्य 'अखिल भारतीय कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। कड़ाके की ठंड और मौसम की प्रतिकूलता के बावजूद श्रोता देर रात्रि तक जमे रहे और कवियों की रचनाओं पर जमकर दाद दी। कार्यक्रम का शुभारंभ कोमल नाजुक द्वारा प्रस्तुत मधुर जिनवाणी वंदना से हुआ। इसके पश्चात तीर्थ क्षेत्र समिति के अध्यक्ष गोकुल राम जैन, सचिव वेद प्रकाश जैन, संजय जैन, त्रिलोक जैन एवं पुष्पेंद्र सीकरी ने आगंतुक कवियों का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया। कवि सम्मेलन का कुशल संचालन करते हुए डॉ. कमलेश जैन 'बसंत' ने आचार्य विद्यासागर जी महाराज को 'वर्तमान के वर्धमान' की संज्ञा देते हुए अपनी श्रद्धा निवेदित की। उमाकांत बिरमुल (बोलखेड़ा): काव्य पाठ की गरिमामयी शुरूआत की। डॉ. मकरंद (कामां): हास्य कविताओं से श्रोताओं को गुदगुदाया, उनकी रचना 'राम कहानी' विशेष रूप से सराही गई। मनोज चौहान: अपनी ओजस्वी वाणी से पांडाल में देशभक्ति और वीरता का जोश भर दिया। कोमल नाजुक: श्रृंगार रस की सुमधुर रचनाओं से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। डी.के. जैन मित्तल: आचार्य विद्यासागर महाराज के द्वितीय समाधि दिवस पर गुरु चरणों में समर्पित मुक्तकों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। डॉ. कमलेश बसंत: इनके गीतों कम हैं पर कमजोर नहीं और सम्मेद शिखर को शिमला-नैनीताल नहीं बनने देंगे ने समाज की अस्मिता और स्वाभिमान को झकझोर दिया। लटूरी लट्टू: हास्य छंदों के माध्यम से ठहाकों की ऐसी झड़ी लगाई कि अंत तक श्रोता मंत्रमुग्ध रहे। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता रमेश चंद्र गर्ग ने की। आयोजन के अंत में तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने सभी कवियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

संसार के संबंध त्याग दें, पर भगवत शरण न छोड़ें: डॉ. पाराशर

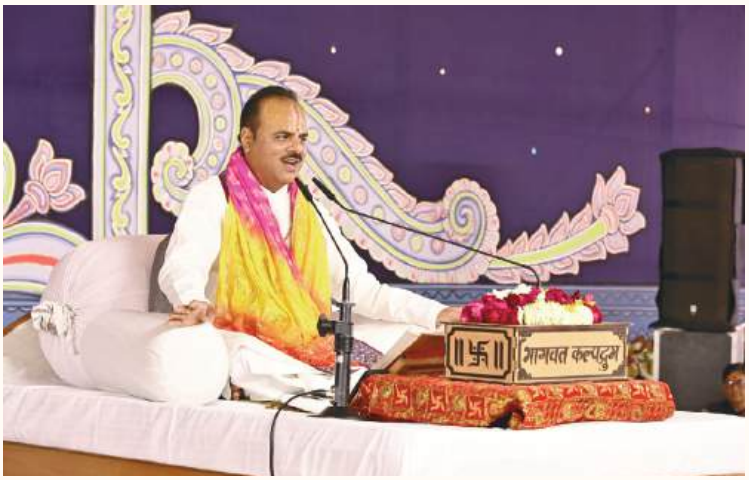

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। हरिशेवा उदासीन आश्रम सनातन मंदिर में महामंडलेश्वर स्वामी हंसराम उदासीन महाराज के मार्गदर्शन में आयोजित आठ दिवसीय सनातन मंगल महोत्सव एवं दीक्षा दान समारोह के अंतर्गत श्रीमद्भागवत महापुराण कथा एवं विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान श्रद्धा और भक्ति भाव से जारी हैं। कथा के दूसरे दिन व्यासपीठ से श्रीधाम वृंदावन के कथा व्यास डॉ. श्यामसुंदर पाराशर ने कहा कि यदि संसार के संबंधों का त्याग करना पड़े तो भी भगवत शरण कभी नहीं छोड़नी चाहिए। भगवान की शरणागति से सभी धर्मों का पालन स्वतः हो जाता है और पापों का नाश होता है। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत सभी शास्त्रों का सार है तथा गुरु कृपा के बिना ज्ञान संभव नहीं। जीवन में पाप-पुण्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य अपने पुण्यों का बखान करता है, जबकि पाप छिपाता है और दूसरों की गलतियों में रुचि लेता है। कलियुग में जीवन अनिश्चित है, इसलिए प्रभु भक्ति से तुरंत जुड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि शरीर का भोजन अन्न है तो आत्मा का भोजन भजन है, इसलिए प्रतिदिन नाम स्मरण आवश्यक है। दूसरे दिन भीष्म स्तुति एवं परीक्षित जन्म प्रसंग का वाचन हुआ। विश्राम के दौरान महामंडलेश्वर स्वामी हंसराम उदासीन महाराज सहित संतों, पदाधिकारियों और श्रद्धालुओं ने आरती की। कथा 25 फरवरी तक प्रतिदिन दोपहर 1 से 4 बजे तक होगी। महोत्सव के तहत पंचकुंडीय श्री विष्णु महायज्ञ, अखंड गीता एवं रामचरितमानस पाठ, शतचंडी अनुष्ठान और वैदिक मंत्रोच्चार निरंतर जारी हैं। शाम को गंगा आरती एवं रासलीला में बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग ले रहे हैं। देशभर से आए श्रद्धालुओं के ठहरने की विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं।